International Journal of Sanskrit Research 2019; 5(6): 88-92

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(6): 88-92
© 2019 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 22-09-2019
Accepted: 24-10-2019

प्रज्ञा
शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत।

Corresponding Author:
प्रज्ञा
शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत।

ब्राह्मण ग्रन्थों में 'क' का स्वरूप

प्रज्ञा

प्रस्तावना

वैदिक वाङ्मय में 'क' का प्रयोग विभिन्न अर्थों में किया गया है, तथापि प्रमुख रूप से प्रजापति देव सुखस्वरूप होने के कारण प्रजापति की 'क' सञ्ज्ञा है। सृष्टि प्रकिया में प्रजापति एक प्रमुख तत्त्व है, प्रमुख देव है। प्रजापति को संसार का जनक तथा सर्वोत्कृष्ट अमर–तत्त्व कहा गया है। संसार की प्रत्येक वस्तु तथा सम्पर्ण लोक, सब प्रजापति के ही रूप हैं – सर्वमु ह्येवेदं प्रजापतिः, सर्वं वा इदं प्रजापतिः यदिम लोकाः यदिदं किंच।[1] प्रजापति परमेष्ठी (सर्वश्रेष्ठ) हैं और सब प्राणियों के स्वामी हैं।[2] संहिता, ब्राह्मणादि वैदिक साहित्य में यह अनिरुक्त, अपरिमित, जनिता, पिता, ब्रह्मा, सँवत्सर, यज्ञ, आत्मा आदि विविध रूपों में वर्णित है। उनका स्वरूप स्पष्ट भी है और अस्पष्ट भी, ये निस्सीम भी हैं और ससीम भी 'उभयं वा एतत् प्रजापतिः – निरुक्तश्च अनिरुक्तश्च, परिमितश्च अपरिमितश्च।[3]'

प्रजापतिः – 'प्रकर्षेण जायत इति प्रजा' प्र उपसर्ग पूर्वक 'जनि प्रादुर्भावे '= जन् धातु से विट् अथवा क्विप् प्रत्यय करके प्रजा शब्द सिद्ध होता है और 'पा रक्षणे'= पा धातु से डति प्रत्यय करके पति शब्द। पालन रक्षण एवं भरण पोषण करने वाला पति होता है। इस प्रकार प्रजानां पतिः = प्रजापतिः। प्रजाओं का पालन रक्षण भरण पोषण करने वाला पिता ही प्रजापति है।

अनिरुक्त – निश्चयेन नितरां वा उच्यत इति निरुक्तः, न निरुक्त अनिरुक्तः। निश्चित अथवा पूर्णरूप से जिसे कहा जाता है, वह निरुक्त है और जो निरुक्त नहीं वह अनिरुक्त है। जिसके लिये किसी विशेषण विशेष का प्रयोग नहीं किया जाता वह अनिरुक्त है और वह अनिरुक्त प्रजापति है। शुक्ल यजुर्वेदीय माध्यन्दिन शतपथ ब्राह्मण में यजुर्वेद के प्रथमाध्याय के षष्ठ मन्त्र के व्याख्यान में यह तथ्य स्पष्ट रूप से वर्णित है। "कस्त्वा युनक्ति स त्वा युनक्ति कस्मै त्वा युनक्ति तस्मै त्वा युनक्ति – इत्येताभिरनिक्ताभिर्व्याहृताभिरनिरुक्तः प्रजापतिः।[4]" अन्य ब्राह्मण तथा अरण्यक साहित्य में भी प्रजापति को अनिरुक्त कहा गया है – 'अनिरुक्त उ वै प्रजापतिः।[5]' निरुक्त और परिमित दृष्टि से प्रजापति को अन्त भी कहा गया है – 'अन्तो वै प्रजापतिः।[6]'

अपरिमित – परितः सर्वतो मीयत इति परिमितः, न परिमितः अपरिमितः। जो चारों ओर से सब ओर से मापा जा सकता है, बाँधा जा सकता है वह परिमित है और जिसे मापा या बाँधा न जा सके वह अपरिमित है। प्रजापति का अनिरुक्त रूप ही अपरिमित है और अपरिमित रूप ही अनिरुक्त है। कौषीतकि ब्राह्मण में कहा गया है कि प्रजापति अपरिमेय हैं, उनकी शक्ति और स्वरूप की सीमा नहीं है।[7] तैत्तिरीय संहिता भी प्रजापति को अमृघ्न (अमर), अनिरूप्य तथा अपरिमित बताती है।[8] संहिता साहित्य में भी प्रजापति को अपरिमित कहा गया है – 'अपरिमितः प्रजापतिः।[9]'

हिरण्यगर्भ – नासदीय सूक्त (ऋ. १०.१२६) में सृष्टि के पूर्व सर्वत्र जल ही जल की कल्पना की गई है। (तम् आसीत् तमसा गूळहमग्रे अप्रकेतं सलिलं सर्वमा इदम्) अतः ब्रह्माण्ड के बीजतत्त्व का उसमें जन्म होना स्वाभाविक है। ऋग्वेद के दशम मण्डल के १२१वें सूक्त में इस बीज को हिरण्यवर्ण का

---

[1] शतपथ ब्राह्मण ५.१.३.१०–११

[2] शतपथ ब्राह्मण ८.४.३.२०

[3] शतपथ ब्राह्मण ७.२.४.३०

[4] माध्यन्दिन शतपथ ब्राह्मण १.१.१.१३

[5] कौषीतकि ब्राह्मण २३.२.६ ‖ ताण्ड्य महाब्राह्मण ७.८.३

[6] माध्यन्दिन शतपथ ब्राह्मण ५.१.३.१३

[7] कौषीतकि ब्राह्मण ६.७

[8] तैत्तिरीय संहिता १.७.३

[9] तैत्तिरीय संहिता १.७.३.२ ‖ का. सं. ८.१३ । ३४.६

कहा गया है। हिरण्यगर्भ उसकी सामान्य सञ्ज्ञा है और प्रजापति से इस हिरण्यगर्भ का तादात्म्य किया गया है। हिरण्यगर्भ और प्रजापति एक ही देव–तत्त्व के वाची हैं। 'प्रजापतिर्वै हिरण्यगर्भः प्रजापतेरनुरूपत्वाय।[10]'' आपो ह यद् बृहतीर्गर्भमायन् गर्भं दधाना जनयन्तीरग्निम्। ततो देवानां समवर्ततासुरेकः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥[11] गर्भं दधानाः की व्याख्या में महीधर ने 'आपो ह वै इदमग्रे सलिलमेवास' [12] को उद्धृत करते हुए लिखा है – 'तथा गर्भ हिरण्यगर्भलक्षणं दधानाः अत एव अग्निं जनयन्तीः, अग्निरूपं हिरण्यगर्भं जनयन्त्यः स्त्पादयिष्यन्त्यः।'

शतपथ ब्राह्मण प्रजापति के जन्म के विषय में कहता है – 'आपो ह वा इदमग्रे सलिलमेवास, तासु तपस्तप्यमानासु हिरण्यमयाण्डं सम्बभूव, तदिदं हिरण्यमयाण्डं यावत्संवत्सरस्य बेला तावत् पर्यप्लवत् ततः संवत्सरे पुरुषः समभवत् स प्रजापतिः।'[13]

क अर्थात् सुखस्वरूप – सायण तथा अन्य भारतीय भाष्यकारों का कथन है कि 'क' सुख को कहते हैं और सुखमय होने के कारण प्रजापति ही 'क' वर्ण से वाच्य है। एकाक्षर कोश के अनुसार कं सुखं जलमाख्यातं कश्च देवः प्रजापतिः। 'क' जल को भी कहते हैं। अतः यह भी हो सकता है कि जल से उत्पन्न होने के कारण यह वर्ण प्रजापति की सञ्ज्ञा बन गया हो। 'क' को प्रजापति का एक नाम मानने की परम्परा ब्राह्मण ग्रन्थों से लेकर परवर्ती धार्मिक साहित्य तक अविच्छिन्न रूप से पाई जाती है दृ कं वै प्रजापतिः, कमेवैष प्रजाभ्यः कुरुते।[14] श्रीमद्भागवत् आदि पुराणं में 'क' शब्द नियमित रूप से प्रजापति का वाची है। बल्कि 'प्रजापति' उपाधि से युक्त होने के कारण दक्ष आदि के लिये भी यह शब्द प्रयुक्त हुआ है। नारायणश्च विश्वात्मा न कस्याध्वरमीयतुः।[15] कस्य = दक्षस्य। 'प्रजापतिर्वै कः'[16] 'सुखं वै कः।'[17]

जनिता एवं सविता – प्रजापति की एक विशेषता सृष्टि की प्रत्येक वस्तु के उत्पादक के रूप में प्रतिष्ठा है। शतपथ ब्राह्मण में प्रजनयिता स प्रजापतिः, [18] प्रजापतिना प्रजनयित्रैताः प्रजाः प्राजनयत।[19] माध्यन्दिन शतपथ ब्राह्मण स्पष्ट रूप से प्रजनन को प्रजापति कहता है – प्रजननं प्रजापतिः।[20] जैमिनीय ब्राह्मण में भी यह वाक्य[21] द्रष्टव्य है। ऋग्वेद में प्राप्त होता है सूर्य सम्पूर्ण स्थावर एवं जंगम जगत् का आत्मा है।[22] कौषीतकि ब्राह्मण प्रजापति को संसार की प्रत्येक वस्तु का जनक बताता है।[23] महर्षि याज्ञवल्क्य प्रजापति को पृथ्वी का जनिता कहते हैं – प्रजापतिर्वै पृथिव्यै जनिता।[24] काल या समय रूप होने के कारण प्रजापति पृथिवी की प्रत्येक वस्तु के जनक हैं – संवत्सरः प्रजापतिः सर्वाणि भूतानि ससृजे।[25] जगत्पति ने पृथिवी लोक को उत्पन्न किया, प्रजापति ने सत्य नियमों को धारण करके द्युलोक को बनाया और आह्लादकारी या सुख देने वाले जलों को उत्पन्न किया। 'मा नो हिंसीज्जनिता यः पृथिव्या यो वा दिवं सत्यधर्मा जजान। यश्चापश्चन्द्रा बृहतीर्जजान कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥[26]

प्रजापति तेजस्वी द्युमण्डल को और कठोर पृथिवी को, मध्य स्थान को और लोकमात्र को तथा मोक्षधाम को सँभाला हुआ है। 'येन द्यौरुग्रा पृथिवी चदृळहा येन स्वः स्तभितं येन नाकः। यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥[27]

प्रजापति सबको उत्पन्न करने वाला तथा प्रेरणा करने वाला होने के कारण सविता है। ताण्ड्य महाब्राह्मण और शतपथ ब्राह्मण प्रजापति को ही सबका प्रेरक और उत्पादक मानते हैं – प्रजापतिर्वै सविता।[28] जो प्रेरक नहीं हो सकता वह उत्पादक भी नहीं हो सकता इसलिये ब्राह्मणकार कहते हैं जो प्रेरक = सविता है वही उत्पादक प्रजापति है – यो एव सविता स प्रजापतिः। [29] प्रेरक ही उत्पादक होता है इसलिये प्रजापति ने प्रेरक (सविता) होकर ही प्रजा का सृजन किया – प्रजापतिः सविता भूत्वा प्रजा असृजत।[30] शतपथ ब्राह्मण कहता है कि वस्तुतः प्रजापति ही सूर्य है और उसकी विविध किरणें विभिन्न देवता – एते वै विश्वेदेवाः रश्मयः योथ यत्परं भाः स प्रजापतिः।[31] इसीलिये शतपथ ब्राह्मण में प्रजापति को उषा का पति कहा गया है – स भूतानां पतिः अथ या सा उषा पत्नी सा। [32]

विश्वकर्मा – प्रजापति ही स्रष्टा होने के कारण विश्वकर्मा हैं। 'प्रजापतिर्वै विश्वकर्मा प्रजापतिसृष्टासीत्येतत्। [33] ' प्रजापति ही विश्वकर्मा है क्योंकि उन्होंने ही इस सम्पूर्ण जगत् का निर्माण किया है – प्रजापतिर्वै विश्वकर्मा। स हीदं सर्वमकरोत्।[34] संसार को बनाने, इसका नियमन करने तथा यहाँ की प्रत्येक क्रिया का सञ्चालन करने के कारण वे ही धाता तथा विधाता हैं। 'स दिक्षु प्रतिष्ठायेदं सर्व दधद् विदधद् अतिष्ठत्। यत् दधद् विदधद् अतिष्ठत्। तस्माद् धाता।'[35]

ऐतरेय ब्राह्मण कहता है कि प्रजापति ही यह सम्पूर्ण जगत् है – 'प्रजापतेर्विभिन्नानामलोकः।' [36] ऐतरेय ब्राह्मण स्पष्ट करता है कि प्रजापति प्रजा को बनाकर विश्वकर्मा हो गया – प्रजापतिः प्रजा सृष्ट्वा विश्वकर्मा अभवत्।[37] जैमिनीय तथा माध्यन्दिन शतपथ ब्राह्मण भी प्रजापति को विश्वकर्मा रूप में स्वीकरते हैं – प्रजापतिर्वै विश्वकमा [38] प्रजापति और विश्वकर्मा की धारणायें वैदिक युग में ही एक हो चुकी थीं। शुक्ल यजुर्वेद में दो स्थानों पर प्रजापति के सन्दर्भ में उनके जगत्कर्तृत्व को व्यक्त करने के लिये 'विश्वकर्मा' विशेषण प्रयुक्त हुआ है। 'प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुञ्चतु।' [39] 'प्रजापतिर्विश्वकर्मा, स न इदं ब्रह्मक्षत्रं पातु।'[40]

यजुर्वेद में विश्वकर्मा को ऋग्वैदिक प्रजापति की भाँति जल से सम्बन्धित तथा सृष्टि से आदि में वर्तमान (समवर्तताग्रे) कहा गया है और त्वष्टा से उसका सम्बन्ध जोडा गया है। 'अद्भ्यः सम्भृतः

[10] तैत्तिरीय संहिता ५.५.१.२
[11] यजुर्वेद, वाजसनेयि संहिता २७वाँ अध्याय, २५वाँ मन्त्र
[12] शतपथ ब्राह्मण ११.१.६.१
[13] शतपथ ब्राह्मण ११.१.६.१–३
[14] शतपथ ब्राह्मण २.५.२.११, ६.२.२.५, ६.४.३.४
[15] कौषीतकि ब्राह्मण ५.४, तैत्तिरीय संहिता १.७.६
[16] श्रीमद्भागवत् ६.४.३
[17] ऐतरेय ब्राह्मण २.३७२
[18] गो. उ. ६.३२
[19] शतपथ ब्राह्मण ३.६.१.६
[20] शतपथ ब्राह्मण ८.४.३.२०
[21] माध्यन्दिन शतपथ ब्राह्मण ५.१.३.१० जैमिनीय ब्राह्मण २.१४७
[22] 'सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च¬', ऋग्वेद, १.११५.१
[23] कौषीतकि ब्राह्मण १२.८
[24] माध्यन्दिन शतपथ ब्राह्मण ७.३.१०.२०
[25] शतपथ ब्राह्मण १०.४.२.२
[26] ऋग्वेद १०.१२१.६
[27] ऋग्वेद १०.१२१.५
[28] ताण्ड्य महाब्राह्मण १६.५.१७
[29] गोपथ ब्राह्मण १.५.२२ ‖ माध्यन्दिन शतपथ ब्राह्मण १२.३.५.१
[30] तैत्तिरीय ब्राह्मण १.६.४.१
[31] शतपथ ब्राह्मण २.३.१.७
[32] शतपथ ब्राह्मण ६.१.३.८
[33] शतपथ ब्राह्मण ८.२.१.१०
[34] शतपथ ब्राह्मण ६.४.१.१२
[35] शतपथ ब्राह्मण ६.५.१.३५
[36] ऐतरेय ब्राह्मण ७.४.८
[37] ऐतरेय ब्राह्मण ४.२२
[38] जैमिनीय ब्राह्मण २.२६३ ‖ माध्यन्दिन शतपथ ब्राह्मण ७.४.२.५ । ८.२.१.१०
[39] शुक्ल यजुर्वेद १२.६१
[40] शुक्ल यजुर्वेद १८.४३

पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्ततााग्रे। तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे ॥[41]

अमर – शतपथ ब्राह्मण कहता है कि जो कुछ संसार में है वह सब अमर्त्य है। वह प्रजापति का रूप है। किन्तु प्रजापति स्वयं अमृत हैं – 'एतद् हि अमृतम्। यद् हि अमृतं तद् हि अस्ति। स एष प्रजापतिः एतद् उ यन्मर्त्यम्। सर्वं वै प्रजापतिः।'[42] लोक तीन हैं किन्तु प्रजापति इन तीनों लोकों से पृथक् एक चतुर्थ सत्ता है। 'त्रयो वा इमे लोकाः। प्रजापतिः अतीमाँल्लोकाँश्चतुर्थः।'[43] इन तीनों मर्त्य लोकों से परे होने के कारण प्रजापति अमर हैं। यही प्रजापति का अमृतत्त्व ऋग्वेद के दशम् मण्डल के १२१ वें सूक्त हिरण्यगर्भध्रजापति सूक्त में वर्णित है – 'यस्य च्छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥[44]

ब्रह्मा एवं भर्ता – प्रजापति सृष्टि को उत्पन्न करने के कारण ब्रह्मा है, उसका पालन भरण पोषण करने के कारण भर्ता और रक्षा करने के कारण पति है। मैत्रायणी एवं काठक संहिता में मिलता है कि प्रजापति ही ब्रह्मा है – प्रजापतिर्वै ब्रह्मा।[45] अथर्ववेदीय गोपथ ब्राह्मण में भी द्रष्टव्य है। शतपथ ब्राह्मण में दो स्थानों पर प्रजापति को ब्रह्म कहा गया है – सर्वमु ब्रह्म प्रजापतिः प्राणा उ वै ब्रह्म।[46] 'प्राणा उ वै प्रजापतिः।'[47] ऐतरेय ब्राह्मण भी यज्ञ रूपी प्रजापति को ब्रह्मा बताता है – 'यज्ञ उ ह वा एष यद् ब्रह्मा। ब्रह्मणि हि सर्वो यज्ञः पतिष्ठितः।'
धारक एवं पोषक होने के कारण याज्ञवल्क्य प्रजापति को भरत कहते हैं – प्रजापतिर्वै भरतः स हीदं सर्वं बिभर्ति।' जैमिनीय ब्राह्मण के अनुसार प्रजापति को व्रीहि और यव ये दो स्तन हैं जिनके द्वारा वह प्रजा का भरण पोषण करता है – 'तै हेतौ प्रजापतेरेव स्तनौ यद् व्रीहिश्च यवश्च ताभ्यामिमाः प्रजाः बिभर्ति।[48] मैत्रायणी संहिता के अनुसार यज्ञ और वर्ष (वर्षा) ये दो प्रजापति के स्तन हैं जिनसे वह पृथक–पृथक् देव और मनुष्यों का भरण पोषण करता है, यज्ञ से देव उपजीवित हैं और वर्षा से मनुष्य, 'प्रजापतेर्वा एतौ स्तनौ यज्ञमस्य देवा उपजीवन्ति वर्षं मनष्याः।'[49] यज्ञ से देव और वर्षा से मनुष्य जीवन धारण करते हैं। इस सत्य तथ्य को लौकिक संस्कृत साहित्य के कविकुलगुरु महाकवि कालिदास ने भी रघुवंश महाकाव्य में दिलीप के चरित्र चित्रण के समय स्वीकार किया है – 'दुदोह गां स यज्ञाय शस्याय मघवा दिवम्। सम्पद् विनिमयेनोभौ दधतुर्भुवनद्वयम् ॥
प्रजापति चन्द्रमा है। 'असौ वै चन्द्रः प्रजापतिः।'[50] प्रजापति अन्न है। अन्नरूप होने से ही प्रजापति समस्त सृष्टि का भरण–पोषण करते हैं। 'अन्नं वा अयं प्रजापतिः।'[51] उसी की सहायता से वे सृष्टि करते हैं।

पति एवं स्वामी – संहिता साहित्य के अनुसार प्रजापति संसार का रक्षक = पति भी है, प्रजापतिर्वै भुवनस्य पतिः।[52] जैमिनीयोपनिषद् पति के स्थान पर गोपा शब्द का प्रयोग करता है – स उ वाव भुवनस्य गोपा।[53] सूर्य चन्द्रादि को गर्भ में धारण करने वाले हिरण्यमय पदार्थ को समस्त जगत् का स्वामी कहा गया है। वह अद्वितीय सृष्टि उत्पत्ति के पूर्व अर्थात् प्रलय अवस्था में विद्यमान था, और है। हिरण्यगर्भः समवर्ततााग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥[54]
सृष्टि की रक्षा के लिये स्थिर किये गये एवं प्रकाशमान होने वाले, शब्द करते हुए द्यु तथा पृथिवी लोक प्रजापति को मन से देखते हैं। इसी के शासन में सूर्य उदित होकर प्रकाशित होता है। यं क्रन्दसी अवसा तस्तभाने अभ्यैक्षेता मनसा रेजमाने। यत्राधि सूर उदितो विभाति कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥[55]
यजुर्वेद में कहा गया है कि प्रजापति प्रजा की रक्षा के लिये अपना तेज तीन ज्योतियों (सूर्य, वायु–इन्द्र–विद्युत् तथा अग्नि) में प्रविष्ट करते हैं, उनसे श्रेष्ठ और कोई नहीं है तथा वे संसार में सर्वत्र व्याप्त हैं दृयस्मान्न जातः परो अन्यो अस्ति य आ विवेश भुवनानि विश्वा। प्रजापतिः प्रजया संरराणस्त्रीणि ज्योतींषि सचते स षोडशी ॥[56] मन्त्र का अन्तिम चरण ज्योतिस्तत्त्व से प्रजापति के किसी न किसी रूप में सम्बन्ध को सूचित करता है और वस्तुतः 'प्रजापति' विशेषण ऋग्वेद में सूर्य के लिये आया है –
दिवो धर्ता भुवनस्य प्रजापतिः पिंशंग द्रापि प्रतिमुञ्चते कविः।[57]
प्रजापति एकमात्र ही अपने सामर्थ्य से श्वास प्रश्वास लेने वाले चेतन तथा पलकें न झपकाने वाले जड संसार का शासक है। जो दृश्यमान जगत् के दो पैरों वाले मनुष्यादि प्राणियों का तथा चार पैरों वाले बैल, अश्व आदि पशुओं पर शासन करता है। यहाँ दयानन्द भाष्य करते हैं परमात्मा स्थावर जङ्गम जगत् का तथा दो पैर और चार पैर वाले प्राणी का स्वामी है। यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव। य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥[58]

लोक–पितामह – सम्पूर्ण प्रजा के जनक होने के कारण प्रजापति ब्राह्मणों में देव तथा असुर दोनों के जनक कहे गये हैं। 'देवाश्च असुराश्च उभे प्रजापत्याः पस्पृधिरे', यह वाक्य लगभग सभी ब्रह्मणं में इसी रूप में यज्ञ सम्बन्धी अनेक कथाओं के प्रारम्भ में आता है।[59] रामायण बालकाण्ड में कहा गया है कि देवता और राक्षस दोनों ही ब्रह्मा जी के पुत्र हैं किन्तु वे देवों से अधिक प्रसन्न रहते हैं – बभूव परमप्रीतो देवैरिव पितामहः।[60]

माता पिता – विश्व को जन्म देने के कारण प्रजापति माता है। प्रजापति ने स्त्री एवं पुरुष दोनों होकर इस विश्व को जन्म दिया है– 'उभयं (पुमाँश्च स्त्रीचेति) उ ह वा एतद् भूत्वा प्रजापतिः प्रजज्ञे।'[61] इसलिये वह माता भी है और पिता भी, वही दोनों दायित्व का निर्वहन करता है, 'मातेव च पितेव च प्रजापतिः।'[62] प्रजापति जनक तथा पालक दोनों प्रकार का पिता है इसलिये उसे जनिता और पिता कहा गया है। 'प्रजापतिर्वै पिता देवानां स जनिता स विभूवसुः।'[63] सभी देवता प्रजापति के पुत्र हैं और वह उनका पिता है, 'तस्य विश्वेदेवाः पुत्राः।'[64] प्रजापति अमर्त्य हैं और सभी

---

41 यजुर्वेद, वाजसनेयि संहिता ३१.१७
42 शतपथ ब्राह्मण ४.५.७.२
43 शतपथ ब्राह्मण ४.६.१.४
44 ऋग्वेद १०.१२१.२
45 मैत्रायणी संहिता १.११.७ । ४.४.५ ‖ काठक संहिता १४.५ ‖ गोपथ ब्राह्मण २.५.८
46 शतपथ ब्राह्मण ७.३.१.४२
47 शतपथ ब्राह्मण ८.४.१.३,४
48 जैमिनीय ब्राह्मण ३.३४६
49 मैत्रायणी संहिता १.६.५
50 शतपथ ब्राह्मण ६.२.२.१६
51 शतपथ ब्राह्मण ७.१.२.४
52 तैत्तिरीय संहिता ३.४.८.६
53 जैमिनीय उपनिषद् ३.१.२.११
54 ऋग्वेद १०.१२१.१
55 ऋग्वेद १०.१२१.६
56 यजुर्वेद, वाजसनेयि संहिता ८.३६
57 ऋग्वेद ४.५३.२
58 ऋग्वेद १०.१२१.३
59 शतपथ ब्राह्मण २.१.१.८ । ५.१.१.१ । ११.१.६.७ ‖ तैत्तिरीय संहिता २.३.७ । ६.३.२
60 रामायण बालकाण्ड १८.३२
61 जैमिनीय ब्राह्मण २.६
62 माध्यन्दिन शतपथ ब्राह्मण ५.१.५.३६
63 जैमिनीय ब्राह्मण ३.११५
64 माध्यन्दिन शतपथ ब्राह्मण ६.३.१.१७

देवता उनके पुत्र हैं। 'प्रजापतिर्वा अमृतः, तस्य विश्वेदेवाः पुत्राः।'[65] अन्यत्र असुरों को भी देवों के साथ–साथ प्रजापति के पुत्र बतलाया है।

ज्येष्ठ एवं श्रेष्ठ – जैमिनीय ब्राह्मण में प्रजापति को अग्रगण्य एवं ज्येष्ठ कहा गया है 'प्रजापतिर्वा अग्र्यं ज्येष्ठ्यम्।'[66] 'प्रजापतिर्ह्येष भुवनेषु ज्येष्ठः।'[67] शतपथ ब्राह्मण सभी देवों को प्रजापति से न्यून बताता है, इस प्रकार उसका श्रेष्ठ होना सिद्ध है। 'प्रजापतिमु वा अनु सर्वे देवाः।'[68] अथर्ववेदीय गोपथ ब्राह्मण, यजुर्वेदीय शतपथ तथा तैत्तिरीय ब्राह्मण प्रजापति को मूर्धा कहते हैं, 'प्रजापतिर्वै मूर्धा'[69] महर्षि याज्ञवल्क्य प्रजापति को देवों में सर्वाधिक तेजस्वी, शक्तिशाली वीर्यवान् कह उनका श्रेष्ठत्व सिद्ध करते हैं, 'प्रजापतिर्वै देवानां वीर्यवत्तमः।'[70]

प्रजापति ज्येष्ठ होने के कारण ही सभी को आत्मिक बल, शारीरिक बल या शक्ति देने वाला है, जिसकी आज्ञा सृष्टि के सभी प्राणी और देवता भी मानते हैं – य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।[71] ऋग्वेद के प्रजापति सूक्त का दयानन्द भाष्य करते हुए कहते हैं नदियों के साथ समुद्र हिमालय पर्वत और बल की प्रतीक बहूरूप समस्त दिशाएँ परमात्मा के महत्त्व को दर्शा रही हैं। यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रं रसया सहाहुः। यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥[72]

प्रजापति ने सृष्टि उत्पत्ति रूप यज्ञ को उत्पन्न करने वाले दक्ष प्रजापति को धारण करने वाले जलों को अपनी महिमा से चारों ओर देखा। यह देवताओं के मध्य सर्वोच्च अद्वितीय देव है। यश्चिदापो महिना पर्यपश्यद्दक्षं दधाना जनयन्तीर्यज्ञम्। यो देवेष्वधि देव एक आसीत्कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥[73]

यज्ञरूप एवं संवत्सर – ब्राह्मण ग्रन्थों में प्रजापति यज्ञ के देवता हैं। यज्ञ संसार की सर्वोच्च शक्ति है, जो प्राणियों की उत्पत्ति तथा कल्याण से सम्बन्धित है, अतः उससे सम्बन्धित प्रजापति का भी उत्कर्ष स्वाभाविक है। प्राणियों की सृष्टि तथा पालन के लिये वे निरन्तर तप तथा यज्ञ किया करते हैं। ब्राह्मण ग्रन्थों में यज्ञ से सम्बन्धित प्रायः प्रत्येक महत्त्वपूर्ण वस्तु का प्रजापति से तादात्म्य कर दिया गया है।

वेदी यज्ञ की प्रतीक है, और यज्ञ है साक्षात् प्रजापति। अतः प्रजापति को अनेक स्थानों में संवत्सर कहा गया है और उन्हें अनन्त काल की एक व्यक्त इकाई माना गया है।[74] यज्ञ से प्रजापति की एकरूपता ब्राह्मण ग्रन्थों में अत्यधिक है। 'यज्ञो वै प्रजापतिः' ब्राह्मणग्रन्थों में प्रायेण पाया जाने वाला वाक्य है।[75] शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है कि प्रजापति ने यज्ञ को अपने स्वरूप के समान रचा। यज्ञ प्रजापति की प्रतिमा या प्रतिरूप है – 'अथैतमात्मनः प्रतिमामसृजत यद्यजम्। तस्मादाहुः प्रजापतिर्यज्ञ इति। आत्मनो ह्येतं प्रतिमामसृजत।'[76] यज्ञ ही प्रजापति की शक्ति है।

इस सृष्टि में अहर्निश चलने वाला यज्ञ प्रजापति द्वारा सञ्चालित है और यह सृष्टिरूप यज्ञ प्रजापति द्वारा ही किया जा रहा है। निरन्तर यजनशील स्वभाव के कारण प्रजापति स्वयं यज्ञरूप है। शतपथकार प्रारम्भ में प्रजापति ही यज्ञ है अतः प्रजापति रूप यज्ञ को ही नियुक्त करने की बात कहते हैं – 'प्रजापतिर्यज्ञः तत्प्रजापतिमेवैतद् यज्ञं युनक्ति।'[77] महर्षि याज्ञवल्क्य शतपथ ब्राह्मण में एक स्थल पर प्रजापति को साक्षात् यज्ञ कहते हैं – 'एष वै प्रत्यक्षं यज्ञो यत् प्रजापतिः।'[78] ऐतरेय ब्राह्मण प्रजापति का परिचय इस प्रकार कराते हैं कि यह वही प्रजापति है जो यज्ञ करता है – 'एष उ वै प्रजापतिर्यो यजते।'[79] काठक संहिता में भी प्रजापति को यज्ञ कहा गया है – प्रजापतिर्यज्ञः।[80]

यज्ञ ही प्रजापति है यह सत्य भी संहिता, ब्राह्मण और अरण्यक साहित्य में पूर्णरूपेण स्वीकार किया गया है – यज्ञः प्रजापतिः।[81] यज्ञो वै प्रजापतिः।[82] तैत्तिरीय आरण्यक प्रजापति को यज्ञ, विष्णु, ब्रह्मा आदि सब कुछ मानता व कहता है दृ 'त्वं यज्ञस्त्वं विष्णुस्त्वं वषट्कारस्त्वं रूद्रस्त्वं ब्रह्मा त्वं प्रजापतिः।'[83]

शतपथ ब्राह्मण में प्रजापति को सप्तदश प्रकार का कहा गया है।[84] क्योंकि वाजपेय यज्ञ में सत्रह स्तोत्र होते हैं, उसमें यजमान को सत्रह दीक्षायें लेनी पडती हैं और वह सत्रह दिन चलता है। कौषीतकि[85] और ऐतरेय ब्राह्मण[86] प्रजापति को सप्तदशधा कहते हैं क्योंकि एक वर्ष में १२ मास तथा ५ ऋतुयें होती हैं और प्रजापति ही वर्ष हैं। इसी करण दीक्षा यज्ञ में १७ ऋचाओं द्वारा अग्न्याधान किया जाता है। वाजपेय में यजमान १२ 'आप्तियाँ' प्रदान करता है क्योंकि वर्ष में १२ मास होते हैं और प्रजापति वर्ष हैं तथा यज्ञ प्रजापति है। 'एता द्वादशाप्तीः जुहोति, द्वादश वै मासाः संवत्सरस्य, संवत्सरः प्रजापत्यि:. प्रजापतिर्यज्ञः।'[87]

प्रजापति ब्रह्माजी ने सृष्टि रचना करते समय यज्ञ के साथ मानव जाति की सृष्टि की और उनसे कहा – इस यज्ञ के द्वारा ही तुम्हारी उन्नति होगी और यह यज्ञ तुमको मनोभिलषित फल देने वाला होगा। सहयज्ञाः प्रज्ञाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः। अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोस्त्विष्ट कामधुक् ॥

तुम यज्ञ के द्वारा देवताओं को संतुष्ट करो और देवता तुममानव को यश, फल प्रदान करेंगे। इस प्रकार तुम दोनों कल्याण के पद को प्राप्त करो। देवान् भावयतानेनने देवा भावयन्तु वः। परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ ॥

निष्कर्ष

संहितादि वैदिक साहित्य में प्रजापति के पिता, माता, जनिता, ब्रह्मा, ज्येष्ठ, यज्ञ, संवत्सर आदि विविध रूपों का जो वर्णन मिलता है वह इस तथ्य का द्योतक है कि प्रजापति के ये विविध रूप ही सृष्टि प्रक्रिया के नाना घटक हैं परिपूरक हैं। जो वस्तुएँ पूर्व उत्पन्न हुईं या वर्तमान में होती हैं उन सबका परमात्मा अधिष्ठाता प्रजापति है अन्य नहीं। जिस जिस कामना को लेकर मनुष्य भावना प्रस्तुत करते हैं वह पूरी होती है, मनुष्य आवश्यक धनों के स्वामी बन जाते हैं। हिरण्यगर्भ = प्रजापति को ही पुराणं में ब्रह्मा कहा गया है। इसी प्रजापति के आधार पर वेदान्त दर्शन के 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' सूत्र का विकास हुआ था। उस सुखस्वरूप प्रजापति को उपहार रूप से अपने आत्मा का समर्पण करना चाहिये, उसकी उपासना

---

[65] शतपथ ब्राह्मण ६.३.१.१७
[66] जैमिनीय ब्राह्मण २.६७
[67] जैमिनीय ब्राह्मण १.४४
[68] माध्यन्दिन शतपथ ब्राह्मण १३.५.३.६
[69] माध्यन्दिन शतपथ ब्राह्मण ८.२.३.१० ‖ तैत्तिरीय ब्राह्मण १.३.१०.१० ‖ गोपथ ब्राह्मण २.२.१८
[70] माध्यन्दिन शतपथ ब्राह्मण १३.१.२.५
[71] ऋग्वेद, १०.१२१.२
[72] ऋग्वेद १०.१२१.४
[73] ऋग्वेद १०.१२१.८
[74] शतपथ ब्राह्मण १०.३.२.१–२
[75] शतपथ ब्राह्मण १.१.१.१३, ३.२.२.४, ५.१.२.१३, ११.१.१.१ य ऐतरेय ब्राह्मण २.२.७ तथा मैत्रायणी संहिता ३.६.५
[76] शतपथ ब्राह्मण ११.१.८.३
[77] माध्यन्दिन शतपथ ब्राह्मण १.१.१.१३
[78] माध्यन्दिन शतपथ ब्राह्मण ४.३४.३
[79] ऐतरेय ब्राह्मण २.८
[80] काठक संहिता ११.४ । १३.१
[81] तैत्तिरीय संहिता ३.२.३३
[82] तैत्तिरीय संहिता २.५.७.३ । ५.१.८.३ ‖ मैत्रायणी संहिता ३.६.५ । ४.७.८
[83] तैत्तिरीय ब्राह्मण १.६.४.१
[84] शतपथ ब्राह्मण ५.१.२११, ६.२.२.६, १३.४.६.१५
[85] कौषीतकि ब्राह्मण ८.२
[86] ऐतरेय ब्राह्मण १.१.१
[87] शतपथ ब्राह्मण ५.२.१.१

करनी चाहिये। प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥[88]

संदर्भ

1. डा. महावीरः ऋक्सूक्त मञ्जूषा, सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ल्ली, सन् २०१०
2. कुमार, प्रो. पुष्पेन्द्रः तैत्तिरीयब्राह्मणम्, नाग प्रकाशक, दिल्ली, सन् १९९८
3. वेदान्तवागीश, श्री आनन्दचन्द्रः ताण्ड्यमहाब्राह्मणम्, राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्, नई दिल्ली, सन् २००३
4. मिश्र, प्रो. युगलकिशोरः माध्यन्दिन शतपथब्राह्मणम्, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, सन् २००४
5. देशपाण्डे, मैत्रेयीः तैत्तिरीय संहिता, न्यू भारतीय बुक कोर्पोरेशन, दिल्ली, सन् २०१२
6. थिटे, गणेश उमाकान्तः तैत्तिरीय–ब्राह्मणम्, न्यू भारतीय बुक कोर्पोरेशन, दिल्ली, सन् २०१२
7. उपाध्याय, बलदेव, संस्कृत वाङ्मय का वृहद् इतिहास, प्रथम खण्ड दृ वेद, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ, सन् १९९६

[88] ऋग्वेद १०.१२१.१० ‖ अथर्ववेद ७.९०.३